राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी और स्वाधीनता आंदोलन एक विष्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 नीता,

एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
नारी शिक्षा निकेतन, स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लखनऊ।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी आधुनिक भारत के महान जननायक थे। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी के विचारों और योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वे असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे, वे राजनीतिज्ञ न होते हुए उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे। वे अर्थशास्त्री न होते हुए भी एक महान अर्थशास्त्री थे। यही नहीं वे एक समाज सुधारक और दार्शनिक भी थे। इन सबसे ऊपर वे एक सच्चे कर्मयोगी थे। वे वर्तमान भारत के राष्ट्र निर्माता थे। उन्होंने अपने सिद्वांतों के आधार पर मानवता को समाज के नवनिर्माण की नई राह दिखाई। इसलिये भारतवासी उन्हें राष्ट्रपिता अथवा बापू के नाम से याद करते हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा के नाम से सम्बोधित किया, महात्मा का अर्थ है महान आत्मा। अतः गांधी जी विश्व के महान नेताओं के समकक्ष माने जाते हैं – वे एलफ्रेड, वांशिगटन, वैलेस, गरीसन तथा इब्राहिम लिंकन आदि राष्ट्र निर्माताओं की भाँति महान थे।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी जी की विशेष महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने सन 1893 से 1915 तक दक्षिणी अफ्रीका में रहकर वहां सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह जैसे अस्त्र अपनाकर भारतीयों की स्थिति सुधारने में सफलता प्राप्त की। सन् 1915 से 1917 तक भारत में रहकर अंग्रेजों की शोषणपूर्ण नीति का अवलोकन किया, तब उन्होंने सन् 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभाली और सन् 1947 तक वे भारतीय राजनीतिक मंच पर छाये रहे। इस युग को गाँधी युग के नाम से भी जाना जाता हैं।

गाँधी जी और सत्य

गाँधी जी के अनुसार सत्य बोलना ही सत्य नहीं है वाणी में और व्यवहार में भी सत्य होना असली सत्य है। सत्य सभी प्रकार की नैतिकता का सार है। सत्य के माध्यम से कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है सत्य उस पेड़ की भांति है जिसके फल कभी समाप्त नहीं होते, यह ईश्वर की भांति अमर है। उनकी दृष्टि से ईश्वर, सत्य, धर्म और नैतिकता सबका एक ही अर्थ है। गांधी जी के विचारों में सत्य वह है जो एक व्यक्ति आंतरिक स्व–अनुभव में महसूस करता है। यह हमारी आत्मा से निकली आवाज है। उनका कहना है कि सत्य ही हमारा आराध्य है। इसी के लिये हमारा जीवन है, हमारी क्रियायें हैं, हमारी सांसों हैं यदि हम सत्य के लिये जीना सीख जायें तो शेष सभी नियमों का पालन सरल हो जाता है क्योंकि सत्य हमारी आत्मा से निकली आवाज है।

गांधी जी के अनुसार – ज्ञान ही हमें सत्य की ओर ले जाता है और अज्ञानता सत्य से दूर ले जाती है। सत्य वह है जो समक्ष है और वास्तविक है और सत्याग्रह सत्य के लिए आग्रह करना है, सत्य की खोज करना है। यह वह कृति है जो सत्य स्नेह तथा अहिंसा पर आधरित है। यह तरीका है जिसके द्वारा सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक अन्याय से लड़ा जा सकता है।

सत्य केवल सच बोलने का नाम नहीं होता बल्कि सच पर अड़े रहने का नाम है। नैतिकता पर जमे रहने का नाम है, नैतिक तरीकों को अपनाने का नाम सत्य है। यह अपनी बात दूसरों पर थोपने का नाम नहीं हैं अपितु दूसरे के विवेक को जाग्रत करने का नाम है। दूसरे की आत्मा तक पहुॅचने का नाम है। गांधी का कहना था कि विश्व के समस्त जीवों से प्रेम करो। धरती पर निम्नतम कोटि का प्राणी भी ईश्वर का प्रतिरुप है इसलिए वह तुम्हारे प्रेम का अधिकारी है। आबू निआदम को ज्ञान देने वाले फरिश्ते की सीख को दोहराते हुए गांधी जी कहते हैं कि जो मनुष्य अपने साथ जीवन बिताने वाले मनुष्य से प्यार करता है, वही ईश्वर से प्यार करता है। गांधी जी ने भारत की स्वतंत्रता के लिये सत्य को एक अस्त्र के रुप में प्रयोग किया।

गांधी जी और अहिंसा

आधुनिक युग में महात्मा गांधी जी ने सत्य के साथ–साथ अहिंसा को भारत की स्वाधीनता आंदोलन में एक राजनीतिक सिद्धांत के रुप में अपनाया है और इसकी शक्ति को प्रमाणित किया। गांधी जी ने यह बताया कि अहिंसा निर्बल व्यक्ति का आश्रय नहीं है बल्कि शक्तिशाली का अस्त्र है। विरोधी की शक्ति से डर जाना या आत्याचार के विरुद्ध बल प्रयोग न कर पाने की स्थिति अहिंसा नहीं है। इसके विपरीत यह नैतिक दृष्टि से शक्तिशाली व्यक्ति या समूह का बल है जो सत्य पर दृढ़ निष्ठा रखने से प्राप्त है। अहिंसा स्वयं एक शक्ति है जिससे विरोधी के हृदय पर विजय प्राप्त की जाती है। मनुष्य के लिये अहिंसा आत्मशुद्धि का साधन है। जब मनुष्य के मन में कोई मैल नहीं रह जाता, तब उसमें इतनी नैतिक शक्ति आ जाती है कि वह अन्याय करने वाले का हृदय परिवर्तन कर देती है। अहिंसा का साधक, सत्य के प्रति अनन्य निष्ठा रखकर असत्य की शक्ति को परास्त करने की क्षमता रखता है इसी अहिंसा रुपी अस्त्र को अपनाकर गांधी जी ने अंग्रेजों का हृदय परिवर्तन कर दिया था।

गांधी जी कहते हैं कि अहिंसा कायर का कवच नहीं है अपितु यह बहादुरी का उच्चतम गुण है। गांधीजी का मानना था कि जो व्यक्ति हिंसा की राह पर चलते है वे विनाश की ओर बढ़ते है और जो अहिंसा के पथ पर चलते हैं वे परम सत्य की प्राप्ति करते हैं तथा दूसरों को भी सत्य से परिचित कराते है। गांधी जी के अनुसार किसी जीव को नहीं मारना ही अहिंसा नहीं है बल्कि मन वचन और कर्म से किसी को कष्ट नहीं पहुॅचना ही अहिंसा है। अहिंसा का मार्ग भले ही सरल दृष्टिगोचर होता है परन्तु इस पर चलना तलवार की तीक्ष्ण धार पर चलने के समान है। सफल साधक ही अहिंसा की डोर पर चल सकता है। अहिंसा का मार्ग अपनाने का यह मतलब कदापि नहीं निकाला जाना चाहिए कि अन्याय एवं अत्याचार सहकर अहिंसा का पालन करें। अन्यायी एवं अत्याचारी की आत्मा को जीतकर हम उसमें परिवर्तन कर सकते हैं। गांधी जी अहिंसा को सर्वोच्च प्रकार की सक्रिया शक्ति भी मानते थे उन्होंने अहिंसा की तुलना अपने भीतर विराजमान भगवान से की है। वे कहते हैं कि अहिंसा रेडियम की तरह काम करती है रेडियम की छोटी से छोटी मात्रा भी किसी रुग्ण अंग के बीच में रख दी जाये तो वह लगातार चुपचाप और बिना रुके काम करती रहती है और अंत में सारे रोगग्रस्त अंग को निरोगी बना देती है।

दूसरे शब्दों में गाँधीजी के अनुसार अहिंसा सकारात्मक दृष्टि से दूसरों के प्रति स्नेह एवं प्रेम की अभिव्यक्ति है अहिंसा वह सिद्धांत है जिसमें अपने विरोधी को प्रेम से जीता जाता है घृणा या लड़ाई से नहीं। अहिंसक की दृष्टि में कोई भी घृणा का पात्र नहीं हो सकता, पापी भी नहीं। गांधी जी का कहना था कि अहिंसा का

पुजारी अपने सहचरों के दुःख से द्रवित होकर उसके निवारण के लिये प्रयत्नशील होगा। वह अपने पराए का भेद मिटाकर जनसेवा में अपना जीवन अर्पित कर देगा। अतः अहिंसा कई तरीकों से व्यक्त होती है– वार्ता, व्रत, धरना, सामाजिक बहिष्कार, असहयोग, हड़ताल सविनय अवज्ञा आदि। उन्होंने कहा कि वीरों की अहिंसा वह अहिंसा होती है जब किसी के पास बल होने के बावजूद भी वह बल का प्रयोग नहीं करते है। कमजोर की अहिंसा वह होती है जो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये विवश होकर अहिंसा का प्रयोग करें। गांधी जी के अनुसार सत्य और अहिंसा दोनों गुण मानव को वास्तविक अर्थों में मानव बनाते है। जिस व्यक्ति में अहिंसा और सत्य के गुणों का समावेश हो जाता है वह निरंतर सफलता प्राप्त करता चला जाता है, जिस प्रकार गांधी जी ने भारत की स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध जो भी संघर्ष किया उन सब में सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को अपनाकर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

गांधी जी और सत्याग्रह

सत्य और अहिंसा का अटूट संबंध ही सत्याग्रह के विचार को जन्म देता है। सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ है–सत्य+आग्रह, अर्थात सत्य पर अडिग रहना। सत्य क्या है ? इसका निर्णय कैसे हो ? जब अहिंसा का पालन करते हुए मनुष्य आत्मशुद्धि कर लेता है तो उसका अन्तःकरण ही सत्य का दर्पण बन जाता है। जब मनुष्य को यह विश्वास हो जाये कि वह सत्य के मार्ग पर चल रहा है, तब चाहे उसे कितनी ही बाधायें और यातनायें क्यों न सहन करनी पड़े, अपने मार्ग से तनिक भी विचलित न होना सत्याग्रह है। सत्य की सिद्धि कठिन तो है परन्तु अन्ततः विजय उसी की होती है। अतः सत्याग्रही कभी पराजय स्वीकार नहीं करता। वह किसी भी परिस्थिति में सत्य के पथ से विचलित नहीं होता। स्वयं सत्य पर दृढ़ रहकर ही वह अपने विरोधी का हृदय परिवर्तन करने को तत्पर होता है। दूसरे शब्दों में सत्याग्रह का अर्थ सभी प्रकार के अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध आत्मबल का प्रयोग करने से था।

सत्याग्राही अपने आपको कष्ट पहुँचाकर जैसे कि–अनशन करके, अथवा कारावास में यातना सहन करके, विरोधी के मन को आंदोलित कर देता है जिससे वह अंततः अन्याय के मार्ग से हटकर न्याय के मार्ग पर चलने के लिए नैतिक रुप से विवश हो जाता है। इसी सत्याग्रह की विधि को गाँधी जी ने स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अपनाया। सत्याग्रह सत्य के लिये आग्रह करना है। सत्य की खोज करना। यह वह कृति जो सत्य स्नेह तथा अहिंसा पर आधारित है। यह वह तरीका है जिसके द्वारा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अन्याय से लड़ा जा सकता है। सत्याग्रह सत्य तक ले जाने का मार्ग है। गांधी जी कहते है कि एक सत्याग्राही को सत्यवादी, अहिंसात्मक एवं दूसरे के लिये मन में कोई बैर द्वेष नहीं रखना चाहिए। गांधी जी आजादी के आंदोलन में इसी सोच को लेकर आये थे।

सत्याग्रह के सिद्धांत में यह बात याद रखना चाहिए कि सत्य तो शाश्वत और निर्विकार है परन्तु मनुष्य स्वयं अपूर्ण है। अतः कोई भी व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता कि उसने सत्य का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है। राजनीति के क्षेत्र में सत्य की व्याख्या के प्रश्न पर मतभेद हो सकता है ऐसी स्थिति में गांधी जी के अनुसार हठधर्मिता का रास्ता अपनाना उपयुक्त नहीं होगा। सत्याग्राही को विरोधी पक्ष के साथ संवाद स्थापित करके एक–दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की प्रेरणा देना चाहिए ताकि दोनों पक्ष मिलकर सत्य का अन्वेषण कर सकें। विरोधी पक्ष सत्याग्राही के आमंत्रण को अस्वीकार कर दे, अर्थात बात–चीत के लिये तैयार न हो तब उसे

नैतिक दबाव के तौर–तरीके का सहारा लेना चाहिए।

महात्मा गांधी जी और स्वतंत्रता आंदोलन

महात्मा गांधी जी ने भारत के स्वधीनता आंदोलन के दौरान सत्य अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को अपनाकर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध सशक्त राष्ट्रीय आंदोलन चलाये जो इस प्रकार है :–

1. असहयोग आंदोलन (1920–1922 तक)– गांधी जी के नेतृत्व में चलाया जाने वाला असहयोग आंदोलन प्रथम जन आंदोलन था। इसमें गांधी जी ने सशक्त अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध एक अहिंसात्मक जंग लड़ी थी। इस आंदोलन का व्यापक जन आधार था, शहरी क्षेत्र से मध्यमवर्ग और ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों और आदिवासियों का इसे व्यापक समर्थन मिला। इसमें श्रमिक वर्ग की भी भागीदारी थी। इस कारण यह प्रथम जन आंदोलन बन गया। असहयोग आंदोलन अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ 01 अगस्त 1920 को गांधी जी द्वारा शुरु किया गया सत्याग्रह आंदोलन था। यह अंग्रेजों द्वारा प्रस्तावित अन्यायपूर्ण कानूनों और कार्यों के विरोध में देशव्यापी आंदोलन था। इस आंदोलन में यह स्पष्ट किया गया था कि स्वराज्य अंतिम उद्देश्य है लोगों ने ब्रिटिश सामान खरीदने से इंकार कर दिया और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को प्रोत्साहित किया। गांधीजी ने अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज्य में लिखा है कि ब्रिटिश सरकार भारत में भारतीयों के सहयोग से ही चल सकती है इसलिए अगर भारतीयों ने सहयोग देने से इंकार कर दिया तो हम ब्रिटिश साम्राज्य के पतन के बाद स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। अतः गांधी जी ने अंग्रेजों को किसी भी प्रकार के सहयोग न देने की नीति अपनाई।

असहयोग आंदोलन के लिये 1919 में पारित रौलेट एक्ट (काला कानून) 13 अप्रैल 1919 को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड सन् 1914 से 1918 तक प्रथम विश्वयुद्ध, हण्टर समिति और खिलाफत आंदोलन आदि कारण विशेष रुप से उत्तरदायी थे। गांधी जी ने आंदोलन को सफल बनाने के लिए सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया और जनता को अपने कार्यक्रम से अवगत कराया। सर्वप्रथम सरकार द्वारा प्रदान की गई उपाधियों को लौटाकर, सिविल सेवाओं, पुलिस, सेना, अदालतों विधान परिषदों, स्कूल और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके आंदोलन प्रारंभ किया तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर जोर दिया गया। घर–घर में चरखे से बने कपड़े का प्रयोग किया जाने लगा जिससे विदेशी कपड़ों का आयात बहुत गिर गया। आंदोलन प्रगति पर था कि दुर्भाग्यवश 5 फरवरी 1922 को नाराज किसानों ने उत्तर प्रदेश के चौरी–चौरा में एक स्थानीय पुलिस स्टेशन पर हमला किया। इस घटना में 21 पुलिस कर्मी और एक थानेदार मारे गये। अतः गांधी जी ने आंदोलन में हिंसा का प्रवेश होने के कारण आंदोलन वापिस ले लिया। यह आंदोलन अत्यन्त सफल रहा क्योंकि इसे लाखों भारतीयों को प्रोत्साहन मिला। इस आंदोलन ने ब्रिटिश प्रशासन को हिलाकर रख दिया।

2. सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–1934) – सरकार द्वारा दमन किये, जाने के विरोध में अहमदाबाद अधिवेशन में कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निर्णय किया। महात्मा गांधी जी ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। इस अभियान का लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के आदेशों की सम्पूर्ण अवज्ञा करना था। सन् 1929 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने घोषणा कर दी कि उसका लक्ष्य भारत को पूर्ण स्वाधीन करना है। इस आंदोलन के दौरान यह निर्णय लिया गया कि भारत 26 जनवरी को पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस मनायेगा। अतः 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में

बैठकें आयोजित की गई और कांग्रेस ने तिरंगा झण्डा फहराया। ऐसी स्थिति में गांधी जी ने 12 मार्च 1930 को साबरमती से समुद्रतट के एक गांव दाण्डी में नमक कानून तोड़ने की यात्रा आरंभ की। इस यात्रा के प्रत्येक कदम के साथ भारतीयों में उत्तेजना और जोश बढ़ता ही जा रहा था। 6 अप्रैल 1930 को गांधी जी ने नमक कानून तोड़कर ब्रिटिश सरकार की धज्जियां उड़ा दी। कार्यक्रम के तहत महिलाओं ने शराब की दुकानों, अफीम के अड्डों और विदशी विक्रेताओं के सामने धरने दिये, विदशी वस्त्रों की होली जलाई गई। सरकार ने आंदोलन को दबाने के लिए सख्त कदम उठाये। गांधी जी सहित अनेक नेताओं को जेल में डाल दिया अनेक प्रकार की यातनायें देने लगे और सन् 1930 से 1932 तक तीन गोलमेज सम्मेलन लंदन में आयोजित किये गये लेकिन भारतीयों को कुछ भी हाथ नहीं लगा। इसी बीच गांधी जी को रिहा कर दिया गया था ताकि वे गोलमेज सम्मेलन में भाग ले सकें। ब्रिटिश सरकार ने कुछ समझौते किये थे लेकिन कुछ दिनों बाद ही ब्रिटिश सरकार ने सभी शर्तों को तोड़ दिया। जिसके कारण यह आंदोलन अपने आप धराशाही हो गया। इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को यह दिखा दिया की अब भारत की जनता उनकी सत्ता ठुकराने के लिये कमर कस चुकी है।

3. **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)** – भारत छोड़ो आंदोलन देश का सबसे बड़ा आंदोलन था जिसकी वजह से अंग्रेज भारत छोड़ने पर मजबूर हो गये थे। यह आंदोलन ऐसे समय प्रारंभ किया गया जब दुनिया काफी बदलावों के दौर से गुजर रही थी। पश्चिम में द्वितीय विश्वयुद्ध लगातार जारी था। पूर्व में साम्राज्यवाद के खिलाफ आंदोलन तेज होते जा रहे थे। ऐसे समय में एक तरफ भारत, गांधीजी के नेतृत्व की आशा कर रहा था, वही दूसरी तरफ सुभाषचन्द्र बोस भारत को आजाद करने के लिये फौज तैयार कर रहे थे ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि जन आंदोलन से भारत की आजादी की मजबूत जमीन तैयार हो चुकी थी, बस उसमें अब स्वतंत्रता के बीज को बोना शेष था।

अप्रैल 1942 में क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद ही स्वतंत्रता के लिये गांधी जी का तीसरा आंदोलन आरम्भ हो गया। इसे भारत छोड़ो आंदोलन के नाम से जाना जाता है।

8 अगस्त 1942 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बम्बई में हुई बैठक में भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव में घोषित किया गया कि अब ब्रिटिश शासन की तत्काल समाप्ति भारत में स्वतंत्रता तथा लोकतंत्र की सथापना के लिये अत्यंत जरुरी है।

भारत छोड़ो आंदोलन द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 9 अगस्त 1942 को आरंभ किया गया था जिसे अगस्त क्रांति के नाम से जाना जाता है। जिसकी बागडोर गांधी जी के हाथो में थी। इस आंदोलन का लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था। इसमें 'करो या मरो' का नारा दिया गया। गांधी जी ने कहा कि इस प्रयास में हम या तो स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे या फिर अपनी जान दे देंगे। लेकिन 9 अगस्त 1942 की सुबह ही गांधी जी सहित कांग्रेस के अधिकांश नेता गिरफ्तार कर लिये उन्हें देश के अलग–अलग भागों में जेल में डाल दिया गया, साथ ही राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देश के प्रत्येक भाग में हड़ताली और प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। सरकार द्वारा पूरे देश में गोलाबारी लाठी–चार्ज और गिरफ्तारियां की गई। लोगों का गुस्सा भी हिंसक गतिविधियों में बदल गया। सरकार ने समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया। सन् 1942 के अन्त तक लगभग 60000 लोगों को जेल में डाल दिया गया। कई हजार लोग मारे गये परन्तु गांधी जी का नारा करो या मरो और अंग्रेजों भारत छोडो सम्पूर्ण देश में गूंज उठा था। गांधी जी द्वारा

चलाये आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को भारत को स्वतंत्र करने के लिए मजबूर कर दिया।

इस प्रकार गांधी जी द्वारा चलाये गये सभी आंदोलन, सत्य, अहिंसा सत्याग्रह के सिद्धान्त पर आधारित थे, उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बहुत अधिक जोर दिया। इसलिए गांधी युग में चारों तरफ खादी ही खादी दिखाई देने लगी थी और लोगों ने उसे हृदय से अपना लिया था। आज चीन जैसे देशों को सबक सिखाने के लिए स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग रामबाण सिद्ध हुआ है।

वर्तमान समय में गांधी जी द्वारा स्वाधीनता आंदोलन में जो भूमिका निभाई वह प्रासंगिक है अथवा नहीं। इस संबंध में स्पष्ट है कि उन्होंने भारत की आजादी में बहुत बड़ा योगदान दिया है। गांधी जी को सभी ने युग पुरुष के रुप में स्वीकार किया। पिछली सदी में शायद ही ऐसा कोई जननायक के रुप में इस धरती पर आया हो जिसने लोगों के जीवन में इतना गहरा प्रभाव छोड़ा हो। गांधी जी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह संबंधी विचार विश्व के अनेक नेताओं ने अपनाये। गांधी जी का कहना था कि – अगर देश का विकास करना है तो गांवों का विकास जरुरी है। कुटीर उद्योग लगाना आवश्यक है, व्यक्तियों या विद्यार्थियों में कौशल विकास करना बहुत जरुरी है जो आज के समय की सबसे बड़ी जरुरत बन गई है। गांधी जी के विचारों को अपनाने से सरकार का भारत को आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य पूरा होने की संभावना है। इसलिए युवा वर्ग को अवश्य ही गांधी जी के विचारों का अध्ययन कर अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। अतः स्पष्ट है कि विश्वशान्ति में गांधी जी के योगदान को कभी भी बुलाया नहीं जा सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- डॉ0 अरोड़ा, एन.डी0 – राजनीति विज्ञान, टाटा मैकग्राहिल नई दिल्ली 2011 पृ0 138
- गावा, ओमप्रकाश – राजनीतिक विचारक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2001 पृ0 65
- गोयल, ओ0 पी0 – भारतीय राजनीतिक विचारक, किताब महल, अलाहाबाद, 1965 पृ0 136
- गांधो मोहनदास करमचन्द – सत्य के प्रयोग आत्मकथा : भारतीय साहित्य संग्रह, राजपाल एण्ड संस दिल्ली, 2018, पृ0 19
- गावा, ओमप्रकाश – राजनीतिक विचारक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2001 पृ0 66
- M. K. Gandhi, My Experiment with truth, P. 591
- कश्यप, सुभाष – संवैधानिक विकास एवं स्वाधीनता संघर्ष, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, 1999, पृ0 123
- गावा, ओमप्रकाश – राजनीतिक विचारक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2001 पृ0 69 प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, 1992, पृ0 1126

Copyright © 2015 *Dr. Neeta*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.